वर्ग दशम। सरिता कुमारी

पाठ -एक. दिनांक-१-४-२०२०

सूर के पद-३

हमारे हरि हारिल की लकड़ी

मन क्रम वचन नंदनंदन उर, यह दृढ़ कड़ी पकरी

जागत सोवत स्वपन दिवस निसि, कान्हा कान्हा जकरी

सुन्नत जोग लागत है ऐसो, जिओ करो ककरी

सुतो व्याधि हमको ले आए, देखी सुनी ना करें

यह तो सूरत नहीं ले शॉप, जिनके मन चकरी

अर्थात

गोपियां अपने आपको हारिल पक्षी तुल्य बताती है।(हारिल पक्षी एक ऐसा पक्षी होता है जो अपनी उड़ान को में संतुलन बनाए रखने के लिए छोटे से लकड़ी को अपने पंजे में दवाए रखता है।) गोपियों के अनुसार जीवन रूपी उड़ान भरने में श्री कृष्ण रूपी लकड़ी की आवश्यकता है जिसे वह अपने ह्रदय में दृढ़ता पूर्वक जकड़ कर रखा है। मन से कर्म से और वचन से नंद के नंदन यानी श्री कृष्ण को दृढ़ता पूर्वक अपने ह्रदय में बसायी हुई हैं। सोते जागते दिन रात कान्हा कान्हा जपती रहती हैं। ऐसे में योग की बातें उन्हें कड़वी ककड़ी के समान लगती है। गोपियां योग की बातों को व्याधि यानी रोग तुल्य बताया है। वे कहती हैं की योग संदेश की बातें उन्हें ना बता कर किसी और को बताना चाहिए जिनका मन एकाग्र नहीं है और चकराया हुआ है। वह अपने आपको श्री कृष्ण में एकाग्र पाती हैं। इसलिए उन्हें किसी भी अन्य ज्ञान की आवश्यकता नहीं है।

शब्दार्थ
हरि -श्री कृष्ण
हारिल -एक प्रकार का पक्षी
नंद नंदन- नंद के पुत्र अर्थात कृष्ण
उर -ह्रदय

करुईककड़ी -कड़वी ककड़ी
व्याधि -रोग
चकरी- जिसका मन एकाग्र ना हो।

छात्र कार्य-

प्रश्न संख्या 1

गोपियों ने श्री कृष्ण के प्रति प्रेम को किस उदाहरण द्वारा अभिव्यक्त किया है?

प्रश्न संख्या २

गोपियों को योग ज्ञान की बातें कैसी लगती हैं?

प्रश्न संख्या३

गोपियां उद्धव को ज्ञान की बातें कि नहीं बताने को कहा है?